REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2021

'दुनिया की सबसे हसीन औरत' कहानी की प्रासंगिकता

डॉ. सतीश अर्जुन घोरपडे
अध्यक्ष हिंदी विभाग
माऊली महाविद्यालय वडाला,सोलापुर ।

आदिवासी जनजातियों के जीवन एवं संघर्ष को साहित्य के माध्यम से जनसामान्य के सामने प्रस्तुत करना बहुत जोखिमभरा कार्य है । यह जानते हुए भी संजीव ने यह जोखिम उठायी है । अपराधियों से सामना होनेपर भी अपनी कलम को न रोकते हुए, आदिवासी जनजीवन के इस 'कलम के सिपाही' ने निरंतर रूप से अपना लेखन शुरू रखा । उनका पूरा साहित्य ऐसे महान विभूतियों के लिए समर्पित है, जिन्होंने आदिवासीयों के लिए संघर्ष किया है । हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार संजीव का नाम सजीवन राम प्रसाद है । संजीव यह नाम देने का महत्वपूर्ण योगदान श्रेष्ठ कथाकार कमलेश्वर का ही है । उनका जन्म एक गरीब किसान के घर में सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश) के बांगरकला गांव में ६ जुलाई १९४७ को हुआ । संजीव का जन्म जिस परिवार में हुआ, वह एक श्रमजीवी किसान परिवार था ।

साहित्य सामाजिक यथार्थ पर अधिक निर्भरशील है, परन्तु यह सामाजिक यथार्थ साहित्यकार के नीजी अनुभव और सर्जन क्षमता से पुननिर्मित होकर कुछ ऐसी नयी आभा से दीप्त हैं कि सामयिक परिदृश्य अधिक स्पष्ट है । संजीव के साहित्य में जीवन की वास्तविकता प्रत्यक्ष उभरी है । जीवन का सविस्तार और स्पष्ट चित्र सर्वसाधारण के समक्ष सुगमता से रखा गया है । इसलिए इनके साहित्य की इतनी लोकप्रियता हुई है । संजीव द्वारा रचित यह कहानी उनके कहानी-संग्रह 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' संग्रह की अंतिम कहानी है। कहानी की शुरूआत सौन्दर्य के परम्परागत प्रतिमानों को खण्डित करते हुए होती हैं। मूलियों का गटठर लिये एक आदिवासी महिला ट्रेन में चढ़ती हैं। टी.टी. और पुलिस के जवान उसकी गरीबी और जहालत का फायदा उठाते हैं और कथावाचक उसका विरोध करता है। वह उस महिला को समझाता है कि जब तक शोषण सहोगी शोषण बढ़ता रहेगा। कथावाचक के आश्वासन दिये जाने पर उसमें वह स्वाभिमान तथा आत्मविश्वास पैदा होता है जिससे वह लेखक की निगाह में दुनिया की सबसे हसीन औरत बन जाती है।

कथा की शुरूआत महमूद, सतपाल और सुरेन्द्र की बातचीत से होती है। महमूद अपने दोनो मित्रों को एक ऐसी औरत के बारे में बता रहा हैं जो उसकी निगाह में दुनिया की सबसे हसीन औरत है "मैं कसम खाकर कहता हूँ कि मैने अपनी ज़िन्दगी में उस जैसी हसीन औरत नहीं देखी"। दोनो मित्रों को उत्सुकता होती है कि आख़िर उसमें ऐसा क्या है जिसके कारण महमूद उसे

दुनिया की सबसे हसीन औरत कह रहा है। सतपाल ने पूछा कि "क्या वह गोरी थी?" फिर सुरेन्द्र ने पूछा कि "उसका नाक-नक्शा कैसा था?" उम्र की बात भी हुई दरअसल वे दोनों मित्र सतपाल और सुरेन्द्र जिन तत्त्वों के आधार पर सौन्दर्य को माप रहे थे, महमूद की निगाह में वे दूसरे और तीसरे दर्जे की खूबसूरती हैं अर्थात रंग-रूप, नाक-नक्शा सौन्दर्य की प्राथमिकता नहीं हैं।

महमूद ने बताना शुरू किया कि लगातार सात दिन बारिश होने के कारण, वह सूर्योदय न देख पाया और मायूस होकर वापिस लौट आया। वह रेल के डिब्बे में मन मारे बैठा था। तभी उसे याद आया कि यह तो ओराँव जन-जातियों का शहर है यहाँ की औरतें अपने चेहरे पर तीन गोदने गुदवाती हैं। रानी सिगनी और केली दई ने कुछ औरतों को साथ लेकर हमलावर मुगलों को शिकस्त दी थी।

इस दिन सरहुल का पर्व था। सभी पुरुष मदिरापान में धुत इधर-उधर पड़े थे। तभी मुगलों ने हमला बोल दिया। तब इन आदिवासी औरतों ने मुगलों के हमलों को नाकाम कर दिया। बारह-वर्ष में उन पर तीन बार हमला हुआ और तीनों बार वह विजयी रहीं| इसी विजय पर्व को वह जनी शिकार के रूप में मनाती हैं। सिगनी, कैली दई की भाँति झलकारी बाई ने भी अंग्रेज़ों से लोहा लिया। महमूद ट्रेन में बैठा इस कोशिश में था कि काश मुझे तीन गोदने वाली औरत दिख जाए। तभी अचानक से वह औरत उसे दिखी। उसे लगा अभी-अभी आसमान से चिरयौवना अनिंद्य अप्सरा की तरह अवतरण हुआ है।

सिर पर मैली चादर में बँधी मूलियों को लेकर वह चढ़ी। उसके भींगे कपड़ो से पानी टपक रहा था। बाहर बारिश हो रही थी, उसने गठ्ठर से बँधी मूलियो को रैक पर रख दिया और फिर उन्हें खोलकर सुखाने लगी ताकि वह सड-गल न जाएँ। जब वह सीट पर बैठी, तभी महमूद ने देखा 'वही तीन गोदनें' फिर प्लेटफार्म पर उतर कर उसने अपने बालों और आँचल को निचोड़ा । उससे उसके मित्रों ने पूछा- "अमाँ मुखड़ा कैसा था-सूरज जैसा, चाँद जैसा, शमा जैसा, बहार जैसा?"क्योंकि अभी तक सतपाल और सुरेन्द्र को मूली की पत्ती और मैले थैलों के अलावा कुछ नहीं दिखा । महमूद ने बताया तभी ट्रेन में टी.टी. साहिबा घुसी और पूछा कि "अरे ये मूली-वूली किसकी है?"तब उस औरत ने बताया कि 'मेरी हैं' । टी. टी. साहिबा ने मूलियों को उलट-पलट कर देखा और पूछा कि-"फूल गोभी या टमाटर-वमाटर नहीं हैं। शायद वह अपने मतलब की चीज़ खोज रही थी कि कुछ मुफ्त में मिल जाए पर जब उसे कुछ नहीं मिला तो औरत को नसीहत दे डाली की अच्छी सब्जियाँ लेकर चढा करो । फिर टी. टी. साहिबा ने झिड़क कर पूछा "टिकट लिया है?" तब उस औरत ने अपने पल्लू में बँधे खूंट से टिकट निकालकर दिखा दिया । जब वह खूँट से टिकट निकाल रही थी, तब टी.टी. साहिबा ने चोर निगाहों से टिकट के अलावा बँधा दस का नोट भी देखा लिया था । अब उसकी नज़र उस दस के नोट पर थी वह कहने लगी कि आजकल तुम लोग भी टिकट लेकर चलने लगे हो और उस औरत से दस रूपये की माँग करते हुए कहा कि दस रूपये मूलियों के देने होंगे । वह औरत गिड़गिड़ाने लगी कि इतना तो मूली बेचने पर मुनाफ़ा भी नहीं होगा, पर टी. टी. साहिबा का दिल नहीं पसीजा । कहने लगी कि या तो दस रूपये दो वरना उतर जाओ । यहाँ नौकरशाही आम आदमी की संघर्षपूर्ण ज़िन्दगी का मज़ाक उड़ा रही है। नौकरशाही द्वारा शोषण और दमन की अन्यायपूर्ण व्यवस्था को किस प्रकार सींचा जा रहा है,इसका उदाहरण टी. टी. साहिबा द्वारा औरत के साथ किए गए व्यवहार से देखा जा सकता है। उसी समय रेलवे पुलिस के दो जवान चढ़े और उन्होंने अच्छी-अच्छी मूलियाँ चुनकर लेना शुरू कर दिया और उस औरत का हाल-चाल पूछने लगे, का हो मोदियाइन ठीक हाल चाल बा नू? जैसे उस महिला का हाल-चाल पूछकर कोई एहसान कर रहे हों, शायद हाल-चाल पूछने की आड़ में वह मूली चुराने की बात को छुपाना चाह रहे थे। बेबस औरत कुछ न कह सकी। खिड़की की तरफ ताकने लगी जहाँ वो शरीफ़ महिलाएँ चाय पी रही थीं। चाय पीने के बाद वे शरीफजादियाँ ट्रेन में मूलियों की रैक के पास आ बैठीं और टी. टी. साहिबा से बतियाने लगीं| औरत पिछली बातों को भूलकर उनकी ओर देखने लगी। उन

शरीफजादियों ने पाँच-पाँच के नोट निकालकर आरती के चढ़ावे की तरह टी. टी. साहिबा को दे दिए। इस पर टी. टी साहिबा ने कहा और कोई होता तो दस से क्या कम लेते जाइये आप लोग तो वैसे भी हमारे लिए रिस्पेक्टफुल हैं, भाग्य विधाता है । इस बात पर सभी लोग मुस्करा उठे।

टी. टी. साहिबा फिर उस औरत के पास पहुँची और दस रूपये की माँग करने लगी। औरत घबराने लगी- दया करो मेम साहिब। ऐसी दया करते फिरे तो हम खाएंगे क्या-आ ऽऽऽ। इस बात को सुनकर सभी लोग ऐसे हँसे कि उबाउ ज़िन्दगी में हँसने का विशेष मौका मिल गया हो। उस औरत की स्थिति ऐसी हो गई जैसे एक कमजोर और निहत्थे व्यक्ति को शिकारियों ने घेर लिया हो। अभी हँसी-विनोद चल ही रहा था कि एक शरीफ़जादी पर मूली आ गिरी और गुस्से में बोली -ऐ तुम लोगों को अक्ल नहीं है। जब उस औरत ने पूछा कि-क्या हुआ? तब वह जंगली और बाजारू शब्दों से उसका अपमान करने लगी। औरत ने उसे अपनी सीट पर बैठने के लिए कहा पर वो गालियाँ दिए जा रही थी। उधर टी.टी.साहिबा उस गरीब और बेबस औरत को दस रूपये के लिए धमकियाँ दिए जा रही थी। माहौल ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सभी उस पर हावी होने की कोशिश कर रहे हैं। तभी महमूद को लगा कि वह औरत रो रही है। महमूद के पूछने पर उसने बताया कि मैं अपने नसीब को रो रही हूँ। आज हमरा साथ कोई मरद होता पैसा होता, रोब होता तो पाँच दस थमा के हमहू इज्जतदार बनल रहत। ऐसे का इज्जत है हमरा? हम बाजारू हैं।

महमूद ये सब सुनकर अपने को धिक्कारने लगता है कि इतना सब कुछ होते हुए भी वह चुप रहा। एक बेबस महिला को परेशान किया जा रहा है और सब के सब तमाशा देख रहे है। महमूद ने खड़े होकर उन शरीफजादियों से टिकट माँगा। वे सब हैरान थीं। उन्हें उम्मीद न थी कि उनसे ऐसे कोई टिकट माँगेगा। अपने बचाव के लिए वह टी. टी. साहिबा का मुँह ताकने लगीं। तब टी.टी. साहिबा ने बचाव करते हुए कहा कि आप कौन होते हैं टिकट माँगने वाले? महमूद ने टी.टी. साहिबा से आइडेंटिटी कार्ड दिखाने को कहा, तो वह घबरा गई और रेलवे पुलिस के जवानों की तरफ देखकर बचाव की गुहार-सी करने लगी। तब महमूद ने उन जवानों से भी कहा कि खाकी वर्दी पहनने का मतलब ये बिल्कुल मत समझना कि आप यह पूरी बोगी मूली की सब्जी समझकर जब चाहें चुन कर ले जा सकते हैं।

महमूद ने अपने मित्रों से कहा कि इस घटना ने मुझे अन्दर तक हिला दिया और मुझे एक बात समझ आ गई कि सिर्फ पहल करने की देर होती है। रास्ते अपने आप खुलते चले जाते हैं। जवान बड़बड़ा रहे थे पर उनका बड़बड़ाना धीरे-धीरे शान्त हो रहा था। जब महमूद ने उस औरत से पूछा कि ऐसे कब तक अन्याय झेलती रहोगी तब एक बूढ़े आदिवासी ने कहा कि रोकने का मतलब आफत मोल लेना है। महमूद ने पूछा कि चेहरे पर ये तीन गोदने का भी कुछ मतलब होता है? बूढ़ा भावुक हो गया पर चुप रहा, तब महमूद को ही वीरांगना रानी सिगनी दई और सेनापति की बेटी कैली की कहानी बतानी पड़ी । महमूद ने जब उसे बैठने को कहा तो भावुकता वश उसके होंठ फड़कने लगे और आँखों से पानी निकलने लगा मगर चेहरा आत्मविश्वास, जिजीविषा, कृतज्ञता स्नेह और सौहार्द से खिला हुआ, महमूद को उसकी आँखों की अतुलनीय शोभा ऐसी प्रतीत हो रही थी कि वह कल्पना करने लगा कि नेतरहाट का सूर्य भी शायद ही इतना सुन्दर होगा। औरत का ऐसा अतुलनीय सौंदर्य उसने कभी नहीं देखा था। ट्रेन में चढ़ने के बाद उसे वहाँ का वातावरण बड़ा ही उबाऊ लग रहा था। नेतरहाट के सूर्योदय का दृश्य न देख पाने का भी मलाल था, किन्तु इस सौंदर्य को देखने के बाद उसे लगा यह समय सम्पूर्ण और सार्थक है। कहानी कहते-कहते अचानक वह खो गया। जब उसे होश आया तो मित्रों से पूछा कि हाँ वो तुम क्या पूछ रहे थे? उसके रूप-रंग, नाक-नक्श उम्र बताऊँ। तब सतपाल ने अफसोस जाहिर करते हुए कहा दुनिया की सबसे हसीन औरत की ख़ूबसूरती पर इन चीजों के दाग न लगाओ। अर्थात जिस पैमाने के हिसाब से ख़ूबसूरती को मापा जाता है वह इस सुन्दरता के लिए दाग है। उसकी ख़ूबसूरती तो ज़ुल्म की

खिलाफत करना, वीरांगना बनकर शत्रुओं को खदेड़ने तथा इतिहास में अपना नाम दर्ज करने में है, जिसके आगे ख़ूबसूरती के परम्परागत उपमान फीके हैं, बेजान है, मूल्यहीन हैं।

संक्षेप में कथावाचक अपने मित्रों सतपाल और सुरेन्द्र को उस हसीन औरत के बारे में बताता है जो महमूद के अनुसार दुनिया की सबसे हसीन औरत है। उसके मित्र उस हसीन औरत के बारे में जानने के लिए बेहद उत्साहित हैं। कभी वे उसके रंग के बारे में पूछते हैं, कभी नैन-नक्श तो कभी उम्र के बारे में पूछते हैं जबकि महमूद मानता है कि ये सब सतही चीजें हैं। महमूद को उस भावपूर्ण चेहरे में जो खूबसूरती नज़र आई वह अव्दितीय थी। उसे नेतरहाट का सूर्योदय देखने का मलाल न रहा। उसके मित्रों ने भी स्वीकार किया कि दुनिया की सबसे हसीन औरत की खूबसूरती पर नाक-नक्श,उम्र इन सतही चीज़ों के दाग न लगाओ।

- **संदर्भः-**

१. मणेर शहाजहान, सामाजिक यथार्थ और कथाकार संजीव
२. काशिद गिरीश, कथाकार संजीव
३. लोंढे रामचंद्र मारुती, संजीवः व्यक्तित्व एवं कृतित्व